Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 1, January-2019, ISSN 2230-7540

फांस उपन्यास में कर्ज में डुबे किसान का अभाव ग्रस्त जीवन: एक दृष्टि

Mahipal*

M.Phil. in Hindi

सार – *किसान जीवन पर लिखा गया उपन्यास गोदान एक प्रकार से महाकाव्य माना जाता है। प्रेमचन्द जी ने तातकालीन कृषक के जीवन को यथार्थ चित्रण किया है।*

इसी कड़ी मे संजीव जी ने फाँस उपन्यास की रचना की जिसका केन्द्र बिन्दू भी किसान को रखा गया है। जो 21 वीं शताब्दी के किसान जीवन का बडा सटीक वर्णन करता है। उन्होंने दिखया दिखया है किसान किस प्रकार अपने परिवार की आधार भूल जरूरतों को भी पूरा नहीं कर पता देश व संसार का भरण-पोषण करने वाले किसान के लिए खेती हमेशा से ही धारे का सौदा रही है वर्तमान समय में तो यह फाँस बन गई है, जो धीरे-धीरे उसे मौत की तरफ धकेल रही है। किसान कर्ज लेकर अपने परिवार को भरण-पोषण करता है। बडी कठिनाई से अपने परिवार की मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा कर पाता है। वहीं दूसरी तरफ उदारीकरण और वैश्वीकरण के दौर ने तो किसान को अपंग बना दिया है। किसान कर्ज लेकर फसल उगाता है और जब वह अपनी फसल बाजार में लेकर जाता है, तो वहाँ भी उसकी दुर्दशा ही होती है। किसान कर्ज लेता है फिर भी कडा मेहनत करता है परन्तु उसका पुरा जीवन अंभावगस्त चला जाता है और अन्त में अपने उत्तराधिकारी के लिए वह कर्ज हो छोड कर जाता है। संजीव जी ने अपने उपन्यास में इसका वर्णन किस प्रकार किया है "उसी प्रसंग में हम किसान जीवन में बढने वाले कर्ज और उनके अभावों में जीवन पर एक दृष्टि डाल रहे है।

----------X----------

फांस उपन्यास में संजीव जी ने बताया है किसान किस तरह अपनी छोटी छोटी आवश्यकताऔ को पूरा करने के लिए कर्ज लेता है। और किस प्रकार ये लिया गया कर्ज उसके लिए फांस बन जाता है। फाँस मे बताया है किसान कर्ज ले लेता है पर चुका नहीं पता अंत में वह आत्महत्या कर लेता है। "भरे आदमी या दो भाई रोहतकारी। (किसान) दो-दो बार फसल मारी गयी, कर्ज लिया न दे पाया, मार लिया खुद को" संजीव ने फांस उपन्यास मैं मुख्य रूप से विदर्भ के किसानों के जीवन को दर्शाया है। विदर्भ में फसल कभी बारिश की भेंट चढ़ जाती है, तो कभी सूखे में मारी जाती है। दोबारा फसल बोने के लिए किसानों को कर्ज लेना चाहता हैं, जिसको वह अपने आजीवन काल में नहीं चुका पाता जब किसान को बैंको से ऋण नहीं मिलता तो वह महाजनों से कर्ज लेतें है। जिनकी दरें ऊँची होती है, जिसको चुकाने में किसान की कई पीढ़ी जा चुकी होती है परन्तु कर्ज चुकता नहीं होता।

शकुन का यह कथन बड़ा सटीक प्रतीत होता है-"इस देश में किसान कर्ज में ही जन्म लेता है, कर्ज में ही जीता है कर्ज में ही मर जाता है। किसान अपनी खेती बचाने के लिए तरह-तरह से कर्ज लेता है और कर्ज लेकर भी अन्त में उसे निराश के बिना कुछ नहीं मिलता फाँस उपन्यास में एसा ही प्रयास शिबु करता है। संजीव ने बताया "कुएँ के लिए सरकारी बैंक से कर्ज लिया था। उसी कर्ज ने उसके जीवन की सारी खुशी सोख ली। खेती में कुछ हासिल न हुआ, जो हुआ कर्ज की भेंट चढ़ गया।"

संजीव जी ने मातृ शक्ति को प्रणाम करते हुए एक महिला किसान के संघर्ष को इस प्रकार दिखाया है "कर्ज चालीस हजार से बढ़कर एक लाख हुआ और साल दर साल बढ़ता रहा सुरशा के मूह की तरह। इधर मुलगिया (लडकिया) जवान हो रही थी, कोई मुलगा अभी तक देखा नहीं नवरा (घरवाला) को तो दारू छोड़कर कुछ दिखाई पडे तब ना पर इन दिनों न नबरा न मुलगी न शादी वह निरंतर खेत और कर्ज के बारे में सोचती रहती थी।" किसान के लिए खेती छोटे का ही सौदा रहा है छोटे ही नहीं मध्यम किसान भी कर्ज में डुबें पडे हैं। संजीव ने फांस उपन्यास में सुनील काका के जीवन के बारे में लिखा जो एक मध्यम किसान है उनके जीवन और कर्ज का वर्णन संजीव जी ने इस प्रकार किया "बुत बनता गया सुनील- इन सब का दोषी मैं हूँ सबको हिम्मत बँधाने वाला खुद ही हिम्मत हार बैठा हवा

www.ignited.in

में किकरे उड रहे थे-कभी कर्ज कभी मर्ज, कभी सूखा, कभी डूबा' दूसरा फिकर"अगर भूत से शादी करोगे तो अपना घर चिता पर ही बनाना पडेगा जो सुनील आज खुद भूत बन चुका था। वह खुद तो डुबा औरो को भी ले डुबा। एसा नहीं किसान को खेती के धारे व कर्ज की समस्या का ज्ञान नहीं परन्तु वह मजबूर है। खेती के अलावा उसके पास कोई हुनर नहीं शिब्बू की बेटी कहती है "तुम लाख कहो तुम सेती (खेती) छोड़ दोगे, नहीं छोड़ सकते। किसानी तुम्हारे खुन में है। " इस प्रकार हम देखते हैं किसान किस प्रकार कर्ज में डूब जाता है, और इस प्रकार डूब जाता है कि उसके लिए सांस लेना भी दूभर हो जाता है और अंत में वह मौत को गले से लगा लेता है इस उपन्यास मैं संजीव ने किसान के अभावों से ग्रस्त जीवन का यथार्थ चित्र कलात्मक ढंग से खरीदा है। किसान किस प्रकार अपनी छोटी-छोटी इच्छाओं का दमन करता है। जो वह सोचता है वह अभावों के कारण जी नहीं जाता खेती में किसान पिसता रहता है। शिबू का बैल मर जाता है तो वह दूसरा बल भी नहीं खरीद पाता वह अपने साले द्वारा दिए गए भैंसे और दूसरे बैल से खेतों में हल चलता है। जिसके कारण वह लोगों में हंसी का पात्र बन जाता है। वह अपने अभावों से तंग आकर कहता है- "अकेला होता तो चला जाता कहीं नागपूर नासिक, मुंबई..... लेकिन ये दो-दो मुलगियाँ (बेटियाँ) बायको (पत्नी) इन सब को फेकर कहा जाऊँ" एसी घटना अन्य किसान मोहन दास की है, जिसका हर बैल मर जाता है और वह स्वयं हल चलता है और उसकी पत्नी पीछे हल को थामती है और बीज बोती है। जिन बच्चों को पढ़ाने के लिए उसके अपने खेत तक बेच दिए वे उसे छोडकर शहर चके गए। उसके अभावों से भरें जीवन को संजीव जी ने इस तरह व्यक्त किया है- "बीपीएल के कार्ड में गेहूँ घर के जात में पीस पोकर दे देती है थाली में मैं बायकों। बस इसी में सिमरी हुई दुनिया" किसान के अभावों से भरे जीवन में एकेला किसान ही नहीं उसका सारा परिवार पिसता रहता है किसान बड़ी मुश्किल से बेटों को तो पढ़ा लेता है परन्तु बेटियों की बात आते ही बेबसी बढ़ जाती है। फांस उपन्यास में शिब्बू- "चाहता तो मैं भी हूँ उन्हें आखरी दम तक पढ़ाना शेती में कोई बरकत नहीं और आगे करता है पढाना तो टल सकता है पर जवान होती मुलगियाँ, शादी कैसे टल सकती है," किसान के घर त्योहार भी बडे साधारण ढंग से मनाये जाते है, किसान के अभाव से भरे जीवन में कोई बडा उत्साह नहीं होता शिबू के घर का दृश्य-नववर्ष पर वही चावल, चावल माड भुना हुआ महुआ कलमी का सांग इस पर कलावती का बडा तीखा व्याग्य है- "फस्टक्लास डीनर हैं आई।" में जो आफ है न आई इसमें स्टार्च है इसके सामने नासिक का सिमिश भी फेल है कलमी के साग में आयरन ही आयरन और स्वाद" जब घर में कोई बीमार होता है तब किसान की बेबसी और अभावों से भरे जीवन की लाचारी सामने आती है। वहां बीमारी का ईलाज करवाने में अपना सबकुछ लुटा देता है फाँस उपन्यास में बिट्बल के साथ ऐसा ही होता है। अपनी गर्भवती पत्नी जो हार्ट की मरीज है उसके ईलाज के पाँच लाख प्लुार देता है जिसके कारण उसके खेत बिक जाते है अंत में से आत्महत्या करनी पड़ती है। इसी प्रकार महिला किसान आशा दिन रात मेहनत करती है लेकिन अंतः में निराशा ही हाथ लगती है "अधपेट या भूखी रहकर खून-पसीने से एक-एक इंच कर जोते खेत सोचा था भगवान एक बार सुन लेगा तो ठीक ठाक घरों में घार-धार लग जाँएगी मुलागयाँ (बेटियाँ) के किन खेती मेरे जी का जंजाल बन गई और पर जिन्दगी भी इसी निराशा के साथ वह आत्महत्या कर लेती है उसके अभावों की गनीमत देखिए उसे मरने पर कफन भी नहीं मिल सकता।

निष्कर्ष:-

इस प्रकार संजीव जी ने फ़ांस उपन्यास में कर्ज में डूबे किसान के अभाव ग्रस्त जीवन का एक संजीव चित्रण किया है। कर्ज व अभाव के कारण गरीब किसान कि कीडो की तर रेंग कर मरने के लिए मजबूर है। भर पेट खाना भी उसे नसीब नहीं होता स्वास्थ और शिक्षा प्राप्त करना उसके लिए दूर की कौडी है। साथ दहेज की चिंता किसान को जीते जी मार देती है वह अपने उताराधिकारी को उतराधिकार में देता है उस वही कर्ज ओर अभावों से भरा जीवन।

संदर्भ सूची:-

1. सजीव फांस वाणी प्रकाशन नई दिल्ली संसकरण 2016 पृ. 14
2. वही लांस पृ. 15
3. वही पृ. 104
4. संजीव कुमार लाँस पृ. 14
5. संजीव काँस पृ. 15
6. वही पृ. 104
7. वही पृ. 137
8. संजीव लांस पृ. 72
9. संजीव लांस पृ. 17
10. संजीव, लांस पृ. 39

www.ignited.in

11. वही पृ. 33

12. व संजीव कांस पृ. 61

13. वही पृ. 83

Corresponding Author

Mahipal*

M.Phil. in Hindi

mahinirmal109@gmail.com